धर्म के दो उद्येश्य होते है। एक सामाजिक और एक आध्यात्मिक। सामाजिक उद्येश्य के तहत धर्म आपको खान पान, रहन सहन, रीति रिवाज इत्यादि के बारे में नियम देता है। काम का बटवारा करता है। इन नियमों के द्वारा समाज की व्यवस्थित सुचारु रूप से चलती है। समाज में शांति बनी रहती है। लोग आपस में भाईचारे से रहते है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

धर्म को तर्क पर बढ़ना चाहिए और तलवार पर नहीं। कोई भी धर्म अपनी उपयोगिता को खो देता है जब यह धर्म के नाम पर अन्याय, हत्याओं, महिला दुर्व्यवहार आदि अपराध होने लगते है । धर्म को समाज में शांति बनाए रखना चाहिए जो समाज में रहने और आध्यात्मिक मार्ग लेने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

आध्यात्मिक नियम भगवान संबंधी होते है। इन में बदलाव नही होता। आध्यात्मिक उन्नती के लिए पहले भी भगवान का स्मरण आवश्यक था, अभी भी है। ये हो सकता है कि बाह्य क्रिया में कालानुसार बदलाव हो। आध्यात्मिक नियम जीव को अनंत सुख के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मन के शुद्धिकरण के लिए तरीके बताते है।

हम हिंदू धर्म का मामला लें, दोनों पहलुओं में कई बदलाव हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों में कई संतों ने बाहरी उपस्थिति में बदलाव की अनुमति दी कि भगवान जो आप पहनते हैं, उससे नहीं जाते हैं, लेकिन आप जो भी सोचते है, वो भगवान नोट करता है। आध्यात्मिक क्रिया में भी प्राचीन काल में तपस्या से अनुष्ठान, फिर पूजा और अब इस युग में भक्ति बतायी गयी है ।

भगवान बुद्ध के समय पंडित लोग वेद और अन्य पवित्रशास्त्र उद्धृत करके लोगों को शराब पीने का, पशु बली चढा कर मांस खाने का उपदेश देते थे। भगवान बुद्ध ने हिंदू धर्म को अस्वीकार करने का फैसला किया, भले ही वह भागवान विष्णु के अवतार थे क्योंकि कोई भी तर्क लोगों को दुराचार से रोकने में सक्षम नही था। उस समय की आवश्यकता थी "पूर्ण अहिंसा.. अहिंसा परमो धर्मः"। उसके बाद शंकरचार्य आये। ये देखकर कि माहोल हिंदू धर्म को फिर से स्थापित करने के लिए सही है, उन्होंने

निराकार दर्शन का उपयोग करके बौद्ध धर्म के निर्वाण को हराया। तब फिर संतों ने भक्ति का प्रचार किया।

इस प्रकार केवल हिंदु धर्म ही समय के अनुसार परिवर्तनशील है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132